PICNIC

Picnics, tours, trips and excursions are part and parcel of our life. They provide us complete opportunities to study the book of Nature as Shakespeare says. “We find sermons in stones, tongues, in trees and books in running brooks”. “Picnic” conjures up a picture of freedom from our daily routine, from the chaos of urban life and from the confines of the concrete jungle. It provides an imagery of fun with family and friends, children playing, laughing, chasing a butterfly and their parents soaking up the atmosphere of happiness, however transient. Humankind has evolved in the lap of nature and the urge to reconnect with the soothing greenery is only natural. Descriptions of picnics show that the idea of a meal that was jointly contributed and was enjoyed out-of-doors was essential to a picnic from the early 19th century.

The Oxford English Dictionary says that the word "picnic" originally referred to fashionable social entertainment in which each person contributed a share of the provisions, and says that the first recorded use of "picnic" in English appears in 1748 in a letter from Lord Chesterfield to his son, in the sense of an assembly or social gathering. A subsequent mention occurs in a letter from Lady M. Coke to Lady Stafford in 1763 from Hanover. Gustaf Palmfelt, a Swede, in a 1738 translation into Swedish used "picnick" (in the sense of an assembly); Swedish continues to use "picnick" and suggests that it is of French or English origin. Larousse Gastronomique states that 'picnic' is a contraction of pique (to pick), piquante (sharp or pungent), and nique (of small value). This suggestion seems commonsensical, but it is guesswork based on the technique of word formation by clipping words together to form a new word.

In the arts and literature, picnics tend to be more concerned with place, action, and figurative meanings and less concerned with food, if it is mentioned at all. Oliver Goldsmith, whom Georgina Battiscombe (English Picnics, 1949) credits with describing the first picnic in English literature in The Vicar of Wakefield (1766) provides these bare bones: "Our family dined in the field, and we sat, or rather, reclined round a temperate repast, our cloth spread upon the hay." Battiscombe insists that a picnic must be a meal eaten outdoors to which diners bring something to eat, even if there is no sharing. She suggests that before the Romantics made nature fashionable "no one connected the idea of pleasure with the notion of a meal eaten anywhere but under a roof".

In London, the so-called Picnic Society (1802) was a short-lived elite social club organized for entertainment. But a decade later "picnic" is used only in the sense of a meal eaten outdoors. However, the idea of picnic is universal, and finds expression in different languages across the world. For example, Italians use scampagnata (holiday in the country), or lolazione sull'erba (luncheon on the grass). Spaniards use comida al aire libre (luncheon on the grass), or comida campestre (eat in the country). Spanish dictionaries seem unaware that Ménage thinks the word may be of Spanish origin. Koreans use both the Chinese so pong (a little meal in the country) and "picnic." Their favorite picnic time occurs when the cherry trees are in bloom. The Japanese have a long history of depicting meals taken outdoors, often celebrating hanami, the cherry blossom season, or another seasonal event. In 1862, "picnic" was translated as shokuji (meal), and in the twentieth century, the Japanese adopted the loanword pikunikku.

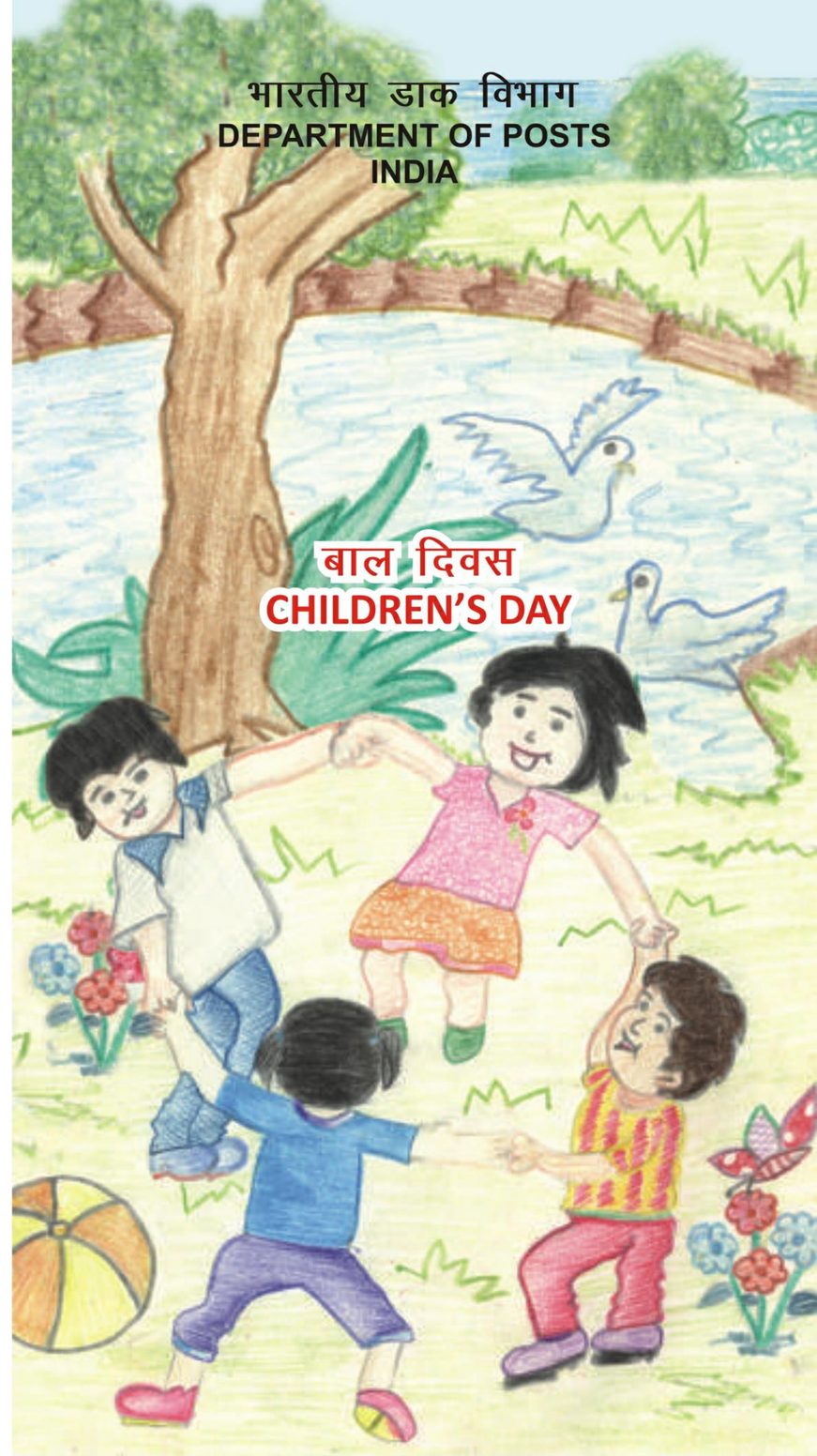
Picnics are often family-oriented or a large get-together such as company picnics, school picnics, etc. Picnics add spice to our life. They refresh out tired nerves. Picnics give students a temporary relief from their studies. After enjoying a picnic, they feel fresh and take up their studies with renewed vigour. Every school and college arranges picnics for its students. Outdoor games or some other form of entertainment are common at large picnics. In established public parks, a picnic area generally includes picnic tables and possibly other items related to eating outdoors, such as built-in grills, water faucets, garbage containers, and restrooms. Some picnics are a potluck, an entertainment at which each person contributed some dish to a common table for all to share.

Picnic is inseparable from nature, and preserving our ecosystem is critical to preserve the tradition of outdoor eating, playing or any other outdoor activity, especially if it involves children. With increase of urbanisation, such spots of untainted greenery where a clear stream hustles past is becoming rare sight. It therefore becomes important that we work towards conservation of nature so that our future generation is able to enjoy their simple pleasures.

The Department of Posts organized a nation-wide competition inviting entries for designing the Commemorative Postage Stamps, Miniature Sheet, First Day Cover and Brochure on the theme “Picnic”. Based on selected entries two Stamps, a Miniature Sheet, First Day Cover and Brochure, on the theme “Picnic”, are being released. The designs on the Stamps, Miniature Sheet, First Day Cover & Brochure are based on the entries submitted by Mr. Gauravdev HB, Ms. Sukanya Behera, Ms. Soujanya Hati, Ms. Yamini. K, Mr. Ankan Sarkar, Mr. Sat Prakash Singh, Ms. Saniya Muhammed, Ms. Pransheeta, Mr. B. N. Nivas Nag, Ms. Alisha Raghav, Ms. Supriya Prasanna Tendulkar, Ms. Arishma Saifi and Ms. Pahul Preet Kaur.

Credits:-

Text	:	Based on material available on the internet
Stamp / Miniature Sheet / FDC / Brochure / Cancellation Cachet	:	Smt. Nenu Gupta, based on selected paintings submitted by participants



विवरणिका BROCHURE

पिकनिक

पिकनिक, यात्रा, भ्रमण और सैर-सपाटा हमारे जीवन का अभिन्न अंग हैं। इनसे हमें प्रकृति के गहन अध्ययन का अवसर प्राप्त होता है, जैसाकि महान साहित्यकार शेक्सपीयर ने भी कहा है, "पत्थरों में हमें संदेश प्राप्त होते हैं, पेड़-पौधे हमसे बातें करते हैं और कलकल बहती नदियां हमें पुस्तकों का ज्ञान प्रदान करती हैं। "पिकनिक" का जिक्र होते ही हमारे मन में अपनी रोजमर्रा की जिन्दगी से आजादी और शहरों की भीड़-भाड़ व भाग-दौड़ भरी, कंक्रीट के जंगल में उलझी जिंदगी के बीच राहत के पलों की तस्वीर उभरती है। यह वह वक्त होता है जब लोग, अपने परिजनों और दोस्तों के साथ आनंदमय समय बिताते हैं। बच्चे खेलने-कूदने, हंसने-गाने और तितलियों के पीछे दौड़ने में व्यस्त हो जाते हैं और उनके माता-पिता, चंद पलों के लिए ही सही पर, उमंग में सराबोर इस वातावरण में खो जाते हैं। मनुष्य प्रकृति की गोद में पला-बढ़ा है। इसलिए, मखमली छुअन का मुलायम अहसास दिलाती कुदरत के आंगन की हरीतिमा का आलिंगन करने की उसकी उत्कट इच्छा स्वाभाविक ही है। पिकनिक के बारे में प्राप्त विवरणों से यह ज्ञात होता है कि घर से बाहर किसी मनोरम स्थान पर साझा तौर पर खान-पान की व्यवस्था, 19वीं सदी के प्रारंभिक दौर से ही इस कार्यकलाप का अनिवार्य अंग रही है।

ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश के अनुसार "पिकनिक" शब्द का मूल तात्पर्य ऐसे फैशनेबल सामाजिक मनोरंजन से था, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति इस आयोजन में योगदान करता था। शब्दकोश के अनुसार अंग्रेजी भाषा में "पिकनिक" शब्द का प्रथम प्रयोग 1748 में हुआ, जब लॉर्ड चेस्टरफील्ड ने अपने पुत्र के नाम लिखे एक पत्र में सामाजिक आयोजन के संदर्भ में इस शब्द का इस्तेमाल किया। इसके बाद इस शब्द का उल्लेख लेडी एम. कोक द्वारा हैनोवर से 1763 में लेडी स्टेफोर्ड के नाम लिखे पत्र में मिलता है। गुश्ताफ पामफेल्ट नामक एक स्वीडन निवासी ने 1738 में स्वीडिश भाषा में किए गए अनुवाद में "पिकनिक" शब्द का इस्तेमाल (सभा के अर्थ में) किया था। स्वीडन में लोग आज भी "पिकनिक" शब्द का खूब इस्तेमाल करते हैं। यहां यह मान्यता है कि यह फ्रांसीसी अथवा अंग्रेजी मूल का शब्द है। लेराउज गैस्ट्रॉनॉमीक के अनुसार पिकनिक शब्द, पिके ('पिक' अर्थात् किसी को किसी स्थान से लेना), पिकांटे (तीखा) और नीक (कम मूल्य का) शब्दों का लघु रूप है। यह सुझाव व्यावहारिक प्रतीत होता है, परन्तु यह अनुमान भर है जो दो या अधिक शब्दों को छोटा कर नया शब्द बनाने की शब्द रचना तकनीक पर आधारित है।

कला और साहित्य जगत में, पिकनिक की प्रासंगिकता किसी स्थान अथवा कार्यकलाप विशेष अथवा प्रतीकात्मक अर्थ में अधिक पाई जाती है और खाने-पीने के अर्थ में कम अथवा नहीं के बराबर रहती है। ऑलिवर गोल्डस्मिथ, जिन्हें जार्जिना बैटिसकॉम्ब (इंग्लिश पिकनिक, 1949) ने वाइकर ऑफ वेकफील्ड (1766) में अंग्रेजी साहित्य में पिकनिक के पहले विवरण का श्रेय प्रदान किया है, ने पिकनिक का विवरण कुछ इस प्रकार प्रदान किया है "हमारे परिवार ने खुले मैदान में साथ बैठकर खाने का विचार किया और हम सब घास-फूस की मुलायम परत पर चादर बिछाकर सुकून से बैठे तथा भोजन का भरपूर आनंद लिया। बैटिसकॉम्ब ने इस बात पर बल दिया है कि पिकनिक उसी को कहा जाएगा जब भोजन की व्यवस्था घर से बाहर की जाएगी और इस आयोजन में शामिल होने वाला प्रत्येक व्यक्ति खाने के लिए कुछ न कुछ अपने साथ लाए, भले ही उसे मिल-बांटकर न खाया जाए। उनका मत है कि अंग्रेजी साहित्य के रूमानवादी लेखकों द्वारा प्रकृति को लोकप्रिय बनाने से पहले "किसी ने भी इस बारे में नहीं सोचा था कि घर के बाहर प्रकृति के खुले आंगन में भोजन करना कितना आनंददायी अनुभव हो सकता है।"

लंदन में पिकनिक सोसाइटी (1802) नामक एक संस्था भी रही, जो कुछ ही समय चली। यह, मनोरंजन के कार्यकलापों का आयोजन करने वाली उच्च सामाजिक वर्ग की संस्था थी। इसके लगभग एक दशक बाद "पिकनिक" का तात्पर्य घर से बाहर भोजन करने के अर्थ में ही समझा जाने लगा। हालांकि पिकनिक की अवधारणा वैश्विक है और विश्व की अनेक भाषाओं में इसकी अभिव्यक्ति हुई है, उदाहरण के लिए, इटली में इसे स्कैम्पग्नेटा (शहर से दूर किसी मनोरम स्थल पर छुट्टी बिताना) अथवा लोलाजियोन सलेबी (घास की मखमली चादर पर बैठकर भोजन करना) कहा जाता है। इसी प्रकार, स्पेन में पिकनिक के संदर्भ में कॉमिडा अल आयर लिब्र (हरी-भरी घास पर बैठकर भोजन का आनंद लेना) अथवा कॉमिडा कैम्पस्ट्रे (शहर से दूर सुंदर प्राकृतिक स्थल पर खान-पान का लुत्फ लेना) शब्दों का प्रयोग किया जाता है। स्पैनिश भाषा के शब्दकोश संभवत: इस तथ्य से अपरिचित हैं कि भाषाविद मेनाज के अनुसार पिकनिक शब्द स्पैनिश मूल का भी हो सकता है। कोरिया में इसके लिए सोपॉन्ग (शोर-गुल से दूर प्रकृति के आंगन के बीच भोजन का मजा लेना), जोकि चीनी मूल का शब्द है और "पिकनिक", दोनों का ही इस्तेमाल किया जाता है। चीन में लोगों के लिए पिकनिक मनाने का सबसे पसंदीदा समय वह होता है, जब चेरी के घने वृक्ष फलों से भरे हुए होते हैं। जापान में भी घर से बाहर खान-पान का आयोजन करने का लंबा इतिहास रहा है। यहां इसे हनामी अर्थात् चेरी के खिलने के मौसम अथवा ऐसे ही किसी अन्य विशेष आयोजन के रूप में मनाया जाता है। जापान में 1862 में "पिकनिक" शब्द का अनुवाद शोकूजी (भोजन) के अर्थ के रूप में किया गया और 20वीं शताब्दी में इसके लिए विदेशी शब्द पिकूनिक्कू को अपना लिया गया।

पिकनिक, प्राय: पारिवारिक अथवा सामूहिक आयोजन जैसे कि कंपनी पिकनिक, स्कूल पिकनिक आदि होते हैं। पिकनिकों के आयोजन से हमारे जीवन में नया रंग छा जाता है। इनमें शामिल होने से हमें असीम मानसिक शांति प्राप्त होती है। पिकनिक पर जाने से बच्चों को पढ़ाई के रोजमर्रा के रूटीन से राहत प्राप्त होती है। पिकनिक की मौज-मस्ती के बाद वे तरो ताजा महसूस करते हैं और नए जोश से पढ़ाई-लिखाई में लग जाते हैं। हर स्कूल और कॉलेज, अपने छात्र-छात्राओं के लिए पिकनिक का आयोजन करता है। बड़े स्तर पर आयोजित पिकनिकों में आउटडोर खेल-कूद अथवा मनोरंजन के अन्य कार्यकलाप भी शामिल किए जाते हैं। लोकप्रिय सार्वजनिक पार्कों में, पिकनिक के लिए अलग हिस्सा निर्धारित होता है, जिसमें पिकनिक टेबल तथा बाहर खान-पान हेतु अन्य सुविधाओं जैसे ग्रिल, पानी के नल, कूड़ेदान और विश्रामकक्ष आदि की व्यवस्था होती है। कुछ पिकनिकों का आयोजन पॉट-लक के आधार पर किया जाता है, जिसके अंतर्गत इसमें शामिल होने वाले हर व्यक्ति को खान-पान की कोई न कोई वस्तु लानी होती है, जिसे सब मिल-बांट कर खाते हैं।

पिकनिक का प्राकृतिक सौंदर्य से गहरा संबंध है, इसलिए, बाहर खान-पान, खेल-कूद और विशेषकर बच्चों से जुड़े मौज- मस्ती के कार्यकलापों के आयोजन की अपनी इस परंपरा को बनाए रखने के दृष्टिकोण से यह अत्यंत महत्वपूर्ण है कि हम अपने पर्यावरण को सुरक्षित रखें। शहरों के तेजी से बढ़ते दायरे के चलते, मनोहारी हरीतिमा के वे स्थल अब दुर्लभ होते जा रहे हैं, जहां निर्मल बहती जलधारा का कलकल संगीत कानों में रस घोले। इसे ध्यान में रखते हुए यह अत्यंत अहम है कि हम प्रकृति और इसके सुदर आंगन की हिफाजत का भरसक प्रयास करें, ताकि आने वाली पीढ़ियां जीवन की इन छोटी-छोटी पर गदगद कर देने वाली खुशियों का रस ले सकें।

डाक विभाग ने "पिकनिक" विषय पर स्मारक डाक-टिकट, मिनियेचर शीट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका का डिजाइन तैयार करने हेतु प्रविष्टियां आमंत्रित करते हुए देशव्यापी प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता की चयनित प्रविष्टियों के आधार पर "पिकनिक" विषय पर दो डाक-टिकट, एक मिनियेचर शीट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका जारी की जा रही है। डाक-टिकटों, मिनियेचर शीट, प्रथम दिवस आवरण और सूचना विवरणिका का डिजाइन मास्टर गौरवदेव एच बी, सुश्री सुकन्या बेहरा, सुश्री सौजन्या हाती, सुश्री यामिनी के, मास्टर अंकन सरकार, श्री सतप्रकाश सिंह, सुश्री सानिया मोहम्मद, सुश्री प्रणशीता, मास्टर बी.एन. निवास नाग, सुश्री आलिशा राघव, सुश्री सुप्रिया प्रसन्ना तेंदुलकर, सुश्री अरिशमा सैफी और सुश्री पाहुलप्रीत कौर की प्रविष्टियों पर आधारित है।

आभार:-

मूलपाठ	:	इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री पर आधारित
डाक टिकट/मिनियेचर शीट/ प्रथम दिवस आवरण/विवरणिका/ विरूपण	:	श्रीमती नीनू गुप्ता, प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत तथा चुनी गई पेंटिंग्स पर आधारित

भारतीय डाक
India Post

तकनीकी आंकड़े
TECHNICAL DATA

मूल्यवर्ग Denomination	: :	1500 पैसा, 15000 पैसा 1500 p, 1500 p
मुद्रित डाक टिकटें Stamps Printed	: :	205110 प्रत्येक 205110 each
मुद्रित मिनियेचर शीट Miniature Sheet Printed	: :	1.0 लाख 0.1 million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: :	वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: :	प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

The philatelic items are available for sale at
http://www.epostoffice.gov.in/PHILATELY_3D.html

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास है।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00